रीडिंग कॉर्नर के ज़रिए बोलने के कौशल को बेहतर करना

अंशिका शर्मा

जब विद्यार्थी कम उम्र में पढ़ना शुरू कर देते हैं तो उनके मन में जीवन भर के लिए सीखने का जुनून पैदा होता है। किताबें पढ़ने से उन्हें बेहतर तरीक़े से सोचने, अपनी कल्पना का उपयोग करने और तर्कशील क्षमताओं का विकास करने में भी मदद मिलती है। जब विद्यार्थियों के पास रीडिंग कॉर्नर होता है तब उनका बोलने, पढ़ने और समझने की ओर उनका सफ़र आसान होता है।

भाषा सीखने की प्रक्रिया में चार परस्पर सम्बन्धित कौशल होते हैं : सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। रीडिंग कॉर्नर एक ऐसा मज़ेदार स्थान है जहाँ विद्यार्थी तरह-तरह की किताबों का आनन्द ले सकते हैं, जो उन्होंने पढ़ा है उसके बारे में बात कर सकते हैं, और अपने विचार साझा कर सकते हैं।

- जब मैं अपनी पहली कक्षा के सीखने के प्रतिफलों का आकलन कर रही थी, मुझे पता चला कि विद्यार्थियों के बोलने के कौशल पर ध्यान देना कितना ज़रूरी है। इन प्रतिफलों ने निम्नलिखित बातों के महत्त्व पर ज़ोर दिया :
- विभिन्न उद्देश्यों के लिए प्रभावी ढंग से संवाद करना। जैसे– कविताएँ पढ़ना, कहानियाँ सुनाना, व्यक्तिगत अनुभव साझा करना, आदि;
- विषयवस्तु से जुड़ने के लिए चर्चा में शामिल होना, अपनी राय देना और प्रश्न पूछना;
- चित्रों के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं के बारीक़ अवलोकन करना;
- किसी दिए गए सन्दर्भ में घटनाओं, गतिविधियों और पात्रों को समझना व उनकी सराहना करना; आदि।

चित्र 1 : मिल-जुलकर साथ पढ़ते और एक दूसरे से सीखते विद्यार्थी

बोलने के कौशल को विकसित करने के लिए, हमारी कक्षा की गतिविधियों में पहले से ही पोस्टर और कविताओं पर बातचीत करना शामिल था। लेकिन हमें लगा कि विद्यार्थियों को चित्रों और पाठ्य सामग्री के बारे में अधिक जानकारी प्रदान करने की आवश्यकता है। इसलिए हमने एक रीडिंग कॉर्नर बनाने का निर्णय लिया जहाँ विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार पुस्तकें चुन सकें; अपने लिए प्रासंगिक विषयों की पहचान कर सकें; और चर्चाओं एवं बातचीत के माध्यम से अपने बोलने के कौशल को बेहतर बना सकें।

रीडिंग कॉर्नर स्थापित करने की प्रक्रिया

रीडिंग कॉर्नर बनाने के लिए मैंने अपनी योजना कक्षा शिक्षिका के साथ साझा की। साथ मिलकर हमने एक रचनात्मक समाधान निकाला। उन्होंने अपने घर से जूट के थैले लाकर दिए। समुदाय के एक सदस्य ने इन थैलों में पुस्तकें रखने के लिए छोटी जेबें बनाकर उन्हें एक अनोखा रूप दिया। हमने इसका नाम 'हमारा पुस्तकालय' रखा।

लगभग 20 दिनों में रीडिंग कॉर्नर तैयार हो गया, और तब मैंने ध्यान दिया कि थैले की डिज़ाइन की वजह से विद्यार्थी किताबों के कवर, यानी मुखपृष्ठ नहीं देख पा रहे थे। इसे सुधारने के लिए हमने किताबों के प्रदर्शन के लिए एक नया तरीक़ा अपनाया। इस तरीक़े में हमने किताबों को दीवार पर लगे एक तार पर लटका दिया जिसके नीचे थोड़ा-सा सहारा दिया गया था। किताबों की प्रस्तुति के इस नए तरीक़े से पुस्तकालय में किताबें अच्छी तरह से नज़र आ रही थीं, और आकर्षक भी लग रही थीं। इस प्रकार 'करके सीखने' से कई फ़ायदे सामने आए :

- अब विद्यार्थी किताबों को आसानी से उलट-पलटकर देख सकते थे। इससे उनमें जिज्ञासा और उत्साह की भावना जागी।
- पहले मुखपृष्ठ छिपे हुए थे, लेकिन अब वे बड़े आकर्षक लग रहे थे।
- इस नए तरीक़े से विद्यार्थियों को किताबों के साथ जुड़ने में बहुत मदद मिली। इससे अब वे किताबों को पढ़ने और उन्हें समझने के लिए प्रोत्साहित हुए।

चित्र 2 : रीडिंग कॉर्नर में किताबों की नए तरीक़े से प्रस्तुति

किताबों के साथ विद्यार्थियों का जुड़ाव

पहली कक्षा के विद्यार्थियों के साथ काम करते हुए मैंने रीडिंग कॉर्नर के लिए स्तर-1 की किताबें चुनीं। जैसे—*बारात, रेलगाड़ी चले छुक-छुक, घर और घर,* आदि। इन किताबों में एक-एक वाक्य और आकर्षक चित्र थे। विद्यार्थियों को इन चित्रों की मदद से व्यक्तिगत अनुभवों से जोड़कर पूरी किताब पढ़ने का अवसर मिला।

पढ़ने की अवधि के दौरान एक बालिका दिव्यन्ती ने *बरखा* शृंखला से *कूदती ज़ुराबें* पढ़ी और अपने अवलोकन साझा किए, "मैंने तालाब देखा, पानी था उसमें, मेंढक था, बहुत सारे पेड़ थे उसमें, मोज़े बिना पैर के भाग रहे थे।"

जब मैंने पूछा कि क्या उसने कभी मोज़ों को चलते हुए देखा है तो उसने एक पल के लिए कुछ सोचा और फिर जवाब दिया, "दीदी! मोज़े कभी-कभी हवा से उड़ जाते हैं। मैंने उन्हें हवा से उड़ते हुए देखा है।" उसकी इस रचनात्मक सोच से मुझे बहुत ख़ुशी हुई।

बाद में, एक अन्य विद्यार्थी, महेश ने उसी शृंखला की किताब *जीत की पीपनी* पढ़ी। जब वह चित्रों से कहानी को पढ़ रहा था तब उससे कहानी का सारांश बताने को कहा। उसने जवाब दिया, "अभी आधी पढ़ी है और आधी ही बताऊँगा।" यह पल मेरे लिए ख़ुशी से भरा हुआ था, क्योंकि मुझे यह महसूस हुआ कि विद्यार्थी मेरे साथ अपने विचार साझा करने में उतना ही सहज महसूस करते हैं, जितना वे अपने माता-पिता के साथ करते हैं।

अब मेरी नज़र एक ऐसी किताब पर पड़ी जिसमें एक बैग की तस्वीर थी, और उस बैग से कई चीज़ें गिर रही थीं। तब मैंने महेश से पूछा कि वह अपने बैग में क्या-क्या लाता है। उसने बताया, "स्लेट, सीस, बेर, कंचे, टॉफ़ी, टिफ़िन।" फिर उसने कहा, "इस किताब में तो विद्यार्थी विद्यालय में पंख भी लाते हैं!" इस बात ने मुझे भाषाविद स्टीवन पिंकर के शब्द याद दिला दिए, "भाषा कोई सांस्कृतिक कलाकृति नहीं है जिसे हम उसी तरह सीखते हों जैसे हम समय बताना सीखते हैं, या जिस तरह संघीय सरकार काम करती है। यह तो हमारे मस्तिष्क की जैविक संरचना का एक विशेष हिस्सा है।" जन्मजात भाषा क्षमता और भाषा को ग्रहण करने के संज्ञानात्मक पहलुओं पर नोम चोम्स्की के सिद्धान्त भी दिमाग़ में आए जो विद्यार्थियों द्वारा भाषा को प्रोसेस करने और समझने के उल्लेखनीय तरीक़ों पर प्रकाश डालते हैं (भाषा सीखी नहीं जाती, पकड़ी जाती है)।

किताबों ने रचनात्मकता और कल्पना को जगाया

शुरू में तो मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को पढ़ने देना और भाषा विकास को बढ़ावा देना था। लेकिन समय के साथ मैंने देखा कि विद्यार्थियों ने किताबों का महत्त्व, सावधानी से उनकी साज-सँभाल करना, उन्हें वापस अपनी जगह पर रखना, ध्यानपूर्वक उनका प्रयोग करना, आदि समझना भी शुरू कर दिया है।

जैसे-जैसे सप्ताह बीतते गए, मैंने उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति में उल्लेखनीय बदलाव देखा। पहले जब उनसे अपनी पसन्द की किसी चीज़ का चित्र बनाने के लिए कहा जाता था तो वे सिर्फ़ झण्डों (जो पहले उनके चित्रों का एक रूढ़ विषय हुआ करता था) के चित्र बनाते थे, लेकिन अब वे *बरखा* की किताबों में देखे हुए जीवन्त दृश्य बनाते हैं। इनमें मेंढक, मोज़े, कप, बर्तन, तोते, आदि के चित्र होते हैं। एक दिन दीपाली ने एक घर, एक पेड़ और एक लड़की का चित्र बनाया। जब मैंने उससे लड़की के बारे में पूछा तो उसने मुस्कुराते हुए कहा, "यह बबीता है।" बबीता हमारे रीडिंग कॉर्नर में रखी हुई एक किताब की पात्र थी। रहमान ने एक छोटे लड़के का चित्र बनाया और जब उससे लड़के का नाम पूछा, उसने कहा, "जमाल", जो रीडिंग कॉर्नर में रखी एक किताब का एक पात्र है।

इस अनुभव ने मुझे सिखाया कि हालाँकि मेरा उद्देश्य विद्यार्थियों के बोलने का कौशल बढ़ाना था, लेकिन इसका प्रभाव इससे

चित्र 3 : किताब पढ़ते हुए दिव्यन्ती

चित्र 4 : दीपाली ने किताब की एक पात्र बबीता का चित्र बनाया

कहीं ज़्यादा हुआ था। रीडिंग कॉर्नर ने न केवल विद्यार्थियों की सोच, कल्पना और लेखन क्षमताओं को प्रभावित किया था, बल्कि यह कहानियों और विचारों की दुनिया के साथ मज़बूत जुड़ाव का ज़रिया भी बन गया था।

विद्यार्थियों ने किताबों के पात्रों और दृश्यों को अपनी कल्पना में शामिल करना शुरू कर दिया, कक्षा में उनका चित्रण किया, उन पर चर्चा की, और अपने बनाए हुए पात्रों को अपनी पढ़ी हुई कहानियों के पात्रों का नाम भी दिया। इससे न केवल उनकी कल्पनाशील और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा मिला, बल्कि ऐसे तरह-तरह के दृश्यों और दृष्टिकोणों के बारे में भी उनकी जानकारी बढ़ी जिनके बारे में उन्हें कोई अनुभव नहीं था।

> **“रीडिंग कॉर्नर ने न केवल विद्यार्थियों की सोच, कल्पना और लेखन क्षमताओं को प्रभावित किया था, बल्कि यह कहानियों और विचारों की दुनिया के साथ मज़बूत जुड़ाव का ज़रिया भी बन गया था।”**

इसके अलावा, रीडिंग कॉर्नर ने विद्यार्थियों में यह समझ पैदा की कि किताबें उन्हें नई दुनिया में ले जा सकती हैं, और उन्हें किताबों के पन्नों से खोज करने व यात्रा करने का मौक़ा मिलता है। इससे पढ़ने में उनकी रुचि बढ़ी क्योंकि उन्होंने कहानियों से सीखने की ख़ुशी का अनुभव किया।

इसका प्रभाव बहुत गहरा था। रीडिंग कॉर्नर की कहानियाँ पूरे विद्यालय में, अलग-अलग कक्षाओं में, और यहाँ तक कि हमारे विद्यार्थियों के घरों में भी गूँजने लगीं। ऐसा लगा जैसे किताबें जी उठी हों, और मैं ख़ुद को यह कहने से नहीं रोक पाई कि “किताबें बोल उठीं, किताबें बोलने लगी हैं!”

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

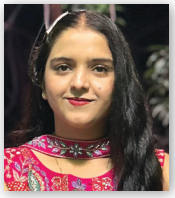

अंशिका शर्मा मध्य प्रदेश के सागर ज़िले के राहतगढ़ ब्लॉक में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़ी हैं। उन्हें बाल साहित्य पढ़ना एवं उसके बारे में अपने विचार लिखना पसन्द है।

सम्पर्क : anshika.sharma@azimpremjifoundation.org